सीखने में मददगार है रोचक बाल साहित्य

– मीना टम्टा

मैं राजकीय प्राथमिक विद्यालय टिगरी, खटीमा में प्रधानाध्यापिका के पद पर कार्यरत हूं। मैं इस विद्यालय में सितम्बर 2012 से एकल शिक्षिका के रूप में कार्य कर रही हूं । वर्तमान में मेरे विद्यालय में 21 छात्र नामांकित हैं। विद्यालय में काम करते हुए मेरा मुख्य उद्देश्य यह रहा कि प्राथमिक स्तर पर बच्चे अच्छे से पढ़ना सीख जाएं। यहां मेरा मानना है कि जब बच्चे समझ के साथ पढ़ना सीख जाएंगे तो वे अन्य विषयों को भी समझ पाएंगे।

विद्यालय में काम करते हुए मेरा अनुभव यह रहा है कि प्रत्येक बच्चे में कुछ न कुछ सीखने की क्षमता अवश्य होती है। बच्चे अपने घर–परिवार , परिवेश से बहुत कुछ सीख के विद्यालय आते है लेकिन अक्षरज्ञान से अनभिज्ञ रहते हैं। जब कोई बच्चा विद्यालय में प्रवेश लेता है तो वह अक्षरों को सीखने का प्रयास करता है। बच्चों के साथ काम करते हुए यह देखने को मिलता है कि अक्षरों की पहचान में उन्हें काफी समय लग जाता है। कुछ बच्चे काफी कोशिश करने के बाद भी अक्षरों– शब्दों की पहचान नहीं कर पाते और पढ़ना नहीं सीख पाते। मैंने यह भी अनुभव किया है कि जो बच्चे अक्षरों की पहचान नहीं कर पाते और पढ़ना नहीं सीख पाते वे अपने प्रति हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं कि हमें पढ़ना नहीं आता। बच्चों की पढ़ने की इस समस्या को देखकर मुझे अच्छा नहीं लगता था। परंतु एकल शिक्षक विद्यालय होने की वजह से मैं इन बच्चों के लिए कोई तरीका नहीं सोच पा रही थी और कभी–कभी यह सोचकर बहुत परेशान भी हो जाती थी इन बच्चों के साथ किस तरह काम करूं? इन बच्चों को पढ़ना कैसे सिखाया जाए? पर मन ही मन में इन बच्चों के लिए बेहतर करने का सोचती रहती थी ।

बच्चों की इस समस्या के समाधान के लिए मैंने अपने विद्यालय के बच्चों को दो समूहों में विभाजित किया । एक समूह उन बच्चों का बनाया जो अक्षरों से परिचित हो चुका है तथा दूसरा समूह उन बच्चों का बनाया जो अक्षर भी नहीं सीख पाए थे। इस बीच मैं अजीम प्रेमजी फाउंडेशन की शिक्षक बैठकों/प्रशिक्षण के संपर्क में आई। इन बैठकों की चर्चाओं से मेरे मन में यह विचार आया कि इन बच्चों के लिए विद्यालय में एक पुस्तकालय संचालित किया जाए तथा उसमें बच्चों के स्तरानुसार चित्रात्मक कहानियों का रोचक बाल साहित्य रखा जाए। इसके माध्यम से बच्चों में पढ़ने का माहौल बनाया जाए और किताबें पढ़ने के प्रति रुचि विकसित की जाए। कुछ समय बाद मैंने एक कमरे में बच्चों के लिए पुस्तकालय बनाया। दोनों समूहों के बच्चों के लिए प्रतिदिन एक घंटे का समय पुस्तकें पढ़ने के लिए निर्धारित किया। इस पुस्तकालय में बरखा सीरीज की

किताबें, अन्य कहानियों की किताबें, कविताएं तथा कहानियों के कार्ड आदि रखे गए। ये किताबें बच्चों को रुचिकर लग रही थी। बच्चे खुशी–खुशी पुस्तकालय में किताबों को उलट–पलट रहे थे और किताबें पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। इस प्रक्रिया में मैं भी बच्चों को किताबें पढ़कर सुनाती और बच्चों के पढ़ने में मदद करती।

कुछ दिनों के बाद दोनों समूहों से कक्षा 3, 4, 5 के कुछ बच्चे अटक–अटक कर पढ़ने लगे। इस तरह से यह क्रम चलता चलता रहा। धीरे–धीरे ये बच्चे पढ़ना सीख गए। बड़े बच्चों को कहानियां ,कविताएं पढ़ता देख कक्षा 1, 2 के बच्चे भी पढ़ने की कोशिश करने लगे। उनके पढ़ने में भी सुधार हुआ और उनकी किताबों में भी रुचि बनी। यह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई कि जिन बच्चों को अक्षर तक पहचानने में दिक्कत होती थी वे बच्चे भी किताबों को पढ़ने लगे। पुस्तकालय में बरखा सीरीज की पुस्तकों से मुझे व मेरे बच्चों को बहुत फायदा हुआ। फायदे यह हुए कि बच्चों ने समझ के साथ पढ़ना सीखा मेरी मेहनत का सकारात्मक प्रभाव बच्चों में दिखने लगा। इस सकारात्मक प्रभाव में मुझे यह देखने को मिला, कक्षा एक–दो के समीर और सैफ अब पढ़ना सीख गए हैं। कक्षा चार के सूरज व साजिया– 2 के पढ़ने में सुधार देखने को मिला। कक्षा पांच की हिना और साजिया– 1 के पढ़ने में सुधार देखने को मिला। इन पुस्तकों को पढ़ने के साथ बच्चे चित्र भी बनाते हैं और कुछ बच्चे स्वयं कहानी बनाने का प्रयास भी करते हैं ।

बच्चों के साथ पुस्तकालय को लेकर किए गए काम के आधार पर मेरा अनुभव कहता है कि पढ़ना सीखने के लिए अक्षर ज्ञान भी जरूरी है लेकिन बच्चा बिना क्रमबद्ध अक्षरज्ञान के भी पढ़ना सीख सकता है। इसके लिए बच्चों के साथ के काम का मैं उदाहरण देना चाहूंगी – पुस्तकालय में 'मुनमुन और मुन्नू', छुपन–छुपाई ये दो किताबें जब बच्चों को पढ़ाई तो उस समय उनको अक्षर ज्ञान बिलकुल भी नहीं था। एक ही किताब को एक बार पढ़ाया, दो बार पढ़ाया और बार–बार पढ़ने के अभ्यास से बच्चे पढ़ने लगे। इसके पीछे यह भी एक कारण था कि इन किताबों में शब्दों का दोहराव था जिनको बच्चे दूसरी बार पढ़ने में आसानी से पहचान पा रहे थे। इस प्रक्रिया में वे शब्दों की पहचान कर पा रहे थे। इसके साथ यह कारण भी था कि इन पुस्तकों में बच्चों के चित्र बने थे। उनके नाम जीत औए बबली भी बार–बार आ रहे थे। उनके कपड़ों का रंग भी प्रत्येक पेज में समान ही था जिससे बच्चों को पहचान करने में आसानी हो रही थी । मैंने बच्चों को बातचीत में यह भी बताया था कि आप जिस पेज को पढ़ोगे उसके चित्र को भी देखते हुए पढ़ना। धीरे–धीरे वे चित्र के माध्यम से भी पढ़ने लगे। जब बच्चों को पढ़ना आने लगा तो उनकी किताबों को पढ़ने में रुचि भी बनने लगी। इस तरह बाद में बच्चे किताब में देखकर अक्षर तथा शब्दों की पहचान के साथ पढ़ने लगे। वर्तमान में बच्चे पुस्तकालय में जाकर अपने पसंद की पुस्तकें चुनकर पढ़ते हैं। इन पुस्तकों को आजकल मैंने एक डिस्प्ले बोर्ड में लगा दिया है ताकि बच्चे अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकें पढ़ सकें। अब इन पुस्तकों का बच्चे अच्छा उपयोग कर रहे हैं।

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय, टिगरी में प्रभारी प्रधानाध्यापिका के पद पर हैं)

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन पुस्तकालय सब के लिए

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन ने छपे हुए शब्दों की ताकत को पहचाना है। इसलिए उसका पुस्तकालय शिक्षा और ज्ञान की उसकी प्रसार योजना का एक महत्वपूर्ण भाग है। पूरे देश में जहां–जहां संस्थान के कार्यालय हैं वहां उनके पुस्तकालय भी स्थित हैं। इसी श्रृंखला में उत्तराखण्ड राज्य के राज्य संस्थान, जिला संस्थानों तथा विकास खण्ड स्तर पर खोले गए शिक्षक अधिगम केन्द्रों (टी.एल.सी.) में पुस्तकालय अहम् स्थान रखते हैं जहां शिक्षकों, शिक्षक–शिक्षकों, युवाओं व बुजुर्गो से साथ साथ बच्चों का भी आना जाना लगा रहता है।

फिलहाल उत्तराखण्ड के देहरादून, उत्तरकाशी व ऊधमसिंह नगर के जिलों से शुरू होकर यह योजना अब तक उत्तराखण्ड के सभी जिलों जिलों में 32 जगहों पर संचालित होकर शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन–पुस्तकालयों की सदस्यता निःशुल्क है। पुस्तकालयों में शैक्षिक–साहित्यिक पुस्तकें, बाल साहित्य, महत्वपूर्ण शैक्षिक रिपोर्ट, सी.डी., डी वी. डी, टी.एल.एम. (विज्ञान किट, गणित किट, ग्लोब... आदि) के साथ ऑनलाइन जर्नल्स के संस्करण भी उपलब्ध हैं जिनसे पाठकों को ज्ञान संग्रह में मदद मिल सके। यद्यपि पुस्तकालय सभी के लिए उपलब्ध है। लेकिन ये शिक्षकों को विशेष रूप से प्रोत्साहित करते हैं।